IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विश्व विख्यात डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम की दार्शनिक विचारधारा

डा0 विभा भारद्वाज,
प्राचार्या,
आर्य कन्या (पी0जी0) कालिज, हापुड़

सारांश

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम भारत के जाने–माने वैज्ञानिक, शिक्षाविद तथा दार्शनिक विचारों वाले थे। उन्होंने सभी क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। डॉ0 अब्दुल कलाम ने भारत के राष्ट्रपति पद को भी सुशोभित किया तथा भारत रत्न से नवाजा गया। आज भी वह सभी क्षेत्र में अमर हैं। डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम महान दार्शनिक गम्भीर विचारक सच्चे शिक्षक एवं उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री थे। वे कहते थे कि धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त के प्रति अटूट निष्ठा होनी चाहिए। धर्म निरपेक्षता हमारी राष्ट्रीयता का आधार है। किसी देश के लोग जितने अच्छे होते हैं वह देश उतना ही सर्वसम्पन्न होता है। किसी देश की संरचना में वहाँ की जनता के जीवन–मूल्य नैतिकता और आचरण प्रकट होते हैं। अपने जीवन, ईमानदारी, निष्ठा और सहनशीलता जैसे मूल्य का अभ्यास करना है।

मूल शब्द :– विश्व विख्यात, दार्शनिक विचारधारा, जीवन मूल्य, नैतिकता, ईमानदारी।

प्रस्तावना

डॉ0 अब्दुल कलाम कहते थे कि मैं एक भजन की चर्चा करना चाहूँगा जिसें मैंने पवित्र प्रशांति निलयम में सुना था। यह भजन सदाचार के विकास के माध्यम से शांति की कामना करता है:

जहा हृदय में हो सदाचार, चरित्र
सुन्दर होता है
सुन्दरता हों जब चरित्र में, घर में
आती है समरसता।।
और समरसता घर 'में' होने पर
राष्ट्र में रहती है व्यवस्था
राष्ट्र में हो ठीक व्यवस्था, शांति रहे सारी दुनिया में।

"हम देख सकते हैं कि हृदय, चरित्र राष्ट्र और संसार किस खूबसूरती से एक दूसरे से जुड़ें हैं। मनुष्य के मन में सदाचार की भावना कैसे भरी जाए? दरअसल यही तो मनुष्य को बनाने वाली– यानि दैवीय शक्तियों को उद्देश्य है।"[1] **सच्ची नैतिक शिक्षा से समाज और राष्ट्र का उत्थान होगा।**

"आज हम बड़े ही अजीब हालात से गुजर रहे हैं। जहाँ तमाम लोग हर वक्त खुद से समाज से और राष्ट्र से एक किस्म की लड़ाई लड़ रहे हैं। हर पल हमारे दिमाग में यह जंग चल रही है कि हम किस तरफ जाएँ? जब सही निर्णय करने में कठिनाई हो तो हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारी बुद्धि को सदाचार की ओर प्रेरित करें।"[2]

"समाज के विभिन्न अंगो में सदाचार पैदा करना हम सभी की जिम्मेदारी है। पूरे समाज को सदाचारी बनाने के लिए परिवार, शिक्षा, सेवा, कैरियर, व्यापार, उद्योग, लोक प्रशासन, राजनीति, सरकार, कानून–व्यवस्था और न्यायालय में, सभी जगह सदाचार होना चाहिए।"[3]

डॉ कलाम के शब्दों में

"यदि किसी देष को भ्रष्टाचार मुक्त करना है और वहाँ के लोगों को उदार बनाना है तो इसके लिए तीन महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं जो परिवर्तन ला सकते हैं– माता, पिता और शिक्षक।"[4]

भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलोर के एक कर्मचारी ने मुझसे इस घटना का जिक्र किया उसने अपनी बेटी को सिखाया कि वह हमेशा सत्य बोले। यदि वह ऐसा करती है तो उसे जिन्दगी में किसी से डरने की जरूरत नहीं। आज वह दस साल की है, परन्तु जब वह दूसरी कक्षा में पढ़ती थी तो वह अपने पिता के दोस्त के यहाँ एक समारोह में भाग लेने के लिए चले जाने के कारण स्कूल नहीं जा सकी। छुट्टी के लिए उसके आवेदन पत्र में पिता ने लिखा कि अपरिहार्य कारण से उनकी बेटी स्कूल नहीं जा सकी। बच्ची ने तुरन्त विरोध किया कि अपरिहार्य कारण की जगह हम समारोह में भाग लेना क्यों नहीं लिखते? आपने ही मुझे सिखाया कि झूठ नहीं बोलना चाहिए, किन्तु मुझे अब क्यों झूठ बोलना चाहिए? पिता को तुरन्त अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने फिर से छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखा जिसमें उन्होंने अनुपस्थिति के सही कारण का उल्लेख किया।

बच्चों को छोटी उम्र में ईमानदारी के पाठ को पढ़ाने का इतना सशक्त असर होता है कि यदि हम अपने सदाचार के मार्ग से भटक जाते हैं तो हम अपने बच्चे सही रास्ते पर ले जाते हैं। ईमानदारी सदाचार से पनपती है। यदि एक बार आपने बच्चों को ईमानदारी का सबक सिखा दिया और उसके मन को सही रास्ते पर ला दिया तो परिवार में चरित्र निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। हर बच्चा और माँ–बाप के दिल में एक ही ख्वाहिश हो कि उसका घर सदाचारी लोगो का घर बनें।

शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, हैदराबाद ने खेलों का आयोजन किया। मैंने वहाँ एक अविस्मरणीय घटना देखी। सौ मीटर दौड़ में भाग लेने के लिए शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग नौ लड़के प्रारंभिक रेखा पर खड़े हो गए। दौड़ शुरू करने के संकेत मिलते ही वे सभी दौड़ने लगे। वे रूक–रूक कर नहीं, बल्कि दौड़ को जीतने और अन्त करने के लिए दौड़े थे। किन्तु एक लड़का डामर पर फिसल गया और वह दो बार उलट गया। वह रोने लगा। अन्य आठ लड़को ने उसे रोते हुए सुना। वे धीरे हो गये और पीछे देखने लगे। फिर वे सभी पीछे मुड़े और वापस आ गए। एक 'डाउन सिन्ड्रोम' से प्रभावित लड़की ने झुककर उसे चूम लिया और बोली 'इससे यह पहले के मुकाबले अधिक ठीक हो जाएगा।' तब सभी नौ प्रतियोगियों ने हाथ में हाथ डालकर चलना प्रारम्भ किया और दौड़ की अन्तिम छोर तक पहँचे। स्टेडियम में मौजूद सभी लोग खड़े होकर ताली बजाने लगे। कई मिनटों तक तालियों की

गड़गड़ाहट होती रही। उस दिन जो लोग वहाँ मौजूद थे वे अभी तक यह कहानी सुनाते हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि हम लोग एक बात जानते हैं– इस जीवन में खुद के जीवन से भी बढ़कर है दूसरे को जीतने में मदद करना, चाहे अपनी चाल धीमी करनी पड़े या अपनी दिशा बदलनी पड़ें। मैं कहता हूँ कि आपको चाल धीमी करने की कोई जरूरत नहीं। मुसीबत में फँसें लोगो की सहायता करने से आपको ऐसी प्रेरणा मिलेगी जिससे आप और अधिक तेजी से दौड़ने लगेंगे। यदि आप इसमें सफल हो जाते हैं तो अपने मन को परिवर्तित करने के साथ–साथ औरो के मन को भी बदलने में सक्षम हो सकेंगे। एक मोमबत्ती दूसरी मोमबत्ती को जलाकर अपना कुछ भी नहीं गँवाती।"[5]

दार्शनिक विचारधारा

मानव अपने हृदय की पवित्रता के सहारे एक प्रबुद्ध नागरिक का सर्वांगीण जीवन जीता है। मानव के उतार–चढ़ाव के संदर्भ में इस बात को चीनी दार्शनिक कंफ्यूसियस बड़े ही खूबसूरत अंदाज में पेश करते हैं। वे कहते हैं :

"जो लोग संसार में नैतिक समरसता चाहते हैं, उन्हें सबसे पहले अपने राष्ट्रीय जीवन को व्यवस्थित करना चाहिए। जो राष्ट्रीय जीवन को व्यवस्थित करना चाहते हैं। उन्हें अपने पारिवारिक जीवन को व्यवस्थित करना चाहिए, जो अपने पारिवारिक जीवन को सँवारना चाहते हैं उन्हें अपनी निजी जिंदगी व्यवस्थित करनी चाहिए जो अपनी निजी जिंदगी को व्यवस्थित कर हृदय को पवित्र बनाना चाहते हैं उन्हें अपनी इच्छाशक्ति को संतुलित करना चाहिए जो अपनी इच्छाशक्ति को दुरूस्त बनाना चाहते हैं उनमें पहले अपने में समझ पैदा करनी होगी। ज्ञान की खोज से समझ पैदा होती है। जब चीजों का ज्ञान हो जाता है तो समझ पक्की हो जाती है। जब समझ पक्की हो जाती है तो इच्छाशक्ति दुरूस्त हो जाती है। जब इच्छाशक्ति संतुलित होती है तो हृदय पवित्र हो जाता है। जब हृदय पवित्र हो जाता है तो निजी जीवन सुधर जाता है। जब निजी जीवन व्यवस्थित हो जाता है। तो पारिवारिक जीवन सुधर जाता है। पारिवारिक जीवन ठीक होने से राष्ट्रीय जीवन व्यवस्थित हो जाता है। राष्ट्रीय जीवन व्यवस्थित होने से विष्व मे शांति कायम होती है। राजा से लेकर सामान्य आदमी तक सभी के लिए सदाचारपूर्ण जीवन जीना ही, सभी बातों का आधार है।

डॉ0 कलाम के शब्दों में

सदाचार के साथ श्रम करना ही
हमारे जीवन की प्रेरक ज्योति हैं,
यदि हम कठिन श्रम करते हैं
तो हम सभी खुशहाल बन सकते हैं,
महान विचारों को धारण करें
क्रियाशील बनने के लिए उठ खड़ें हों,
सदाचार ही हमारे पथप्रदर्शक हों।"[6]

राष्ट्रीयता

राष्ट्र व्यक्ति से बड़ा होता है

स्वतन्त्रता आंदोलन ने हमारे अंदर यह भाव भर दिया कि राष्ट्र किसी व्यक्ति या संस्था से बड़ा होता है किन्तु विगत कुछ दशकों से यह राष्ट्रीय भाव लुप्त होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि सभी राजनीतिक दल आपस में सहयोग करते हुए इस ज्वलंत प्रश्न का उत्तर दें–"भारत" कब एक विकसित राष्ट्र बनेगा?"[7]

आवश्यकता है कि लोगों की सोच में समरसता हो। हमें यह सोचने और महसूस करने की जरूरत है कि राष्ट्र किसी व्यक्ति या संस्था से बड़ा होता है। हम लोगो के दिमाग में यह बात घर कर गई कि 'हम यह नहीं कर सकते।' फिर भी देश के विभिन्न संस्थानों में काम करने और मिशन के रूप में चलने वाली परियोजनाओं में कई परिणामों को नजदीक से देखने के बाद मेरा अनुभव यह है कि स्पष्ट उद्देश्य से जब भी हमने कोई लक्ष्य पाने का निर्णय लिया तब हमने उसे प्राप्त किया। सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोंनो का अनुभव रहा है कि जब भी हम मिशन के रूप में कोई काम करने का संकल्प लेते हैं तो हमें हमेशा, कामयाबी मिलती है।"[8]

राष्ट्रीय सम्मान का भाव

हम अपने परिश्रम से विकासशील भारत को विकसित भारत में बदलेंगे

जब भी आप मीडिया और अन्य माध्यमों से सांस्कृतिक हमले को महसूस कर बैचेन होते हैं तब आप महसूस करें कि आप एक शाश्वत सभ्यता की संतान है। हमने कई हमलों को झेला है।

हमारे ऊपर कई वंशों का शासन रहा है, किन्तु आज हमारे देश पर ऐसे किसी हमले का खतरा नहीं है और यह आजाद है। जितने भी विदेशी आक्रमण हुए, उनके साथ आने वाली सांस्कृतिक विशेषताओं को हमने अपनाया। आज हमने विविधतापूर्ण सौ करोड़ की आबादी की देखरेख के लिए अपने नेतृत्व में महान गुण पैदा कर लिया है।"[9] अब हमें अपने देश को खतरा पहुँचाने वाले किसी धर्म या किसी व्यक्ति की सनक का समर्थन नहीं करना चाहिए।

वे कहते हैं कि धर्म–निरपेक्षता के सिद्धान्त के प्रति अटूट निष्ठा होनी चाहिए। धर्म–निरपेक्षता हमारी राष्ट्रीयता का आधार है और हमारी सभ्यता का एक सबल पक्ष है। सभी धर्मो के नेताओं को एक ही तरह का संदेश देना चाहिए जिससे लोगो के दिलोदिमाग में एकता का भाव पैदा हो। शीघ्र ही हमारा देश अपने स्वर्णिम युग में प्रवेश करेगा।"[10] जब आपके मन में पराजय का भाव उभरे तो आप घबराएं नहीं और महसूस करें कि आप एक महान देश के नागरिक हैं। हम खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हैं हम अपना संचार उपग्रह खुद बनाते हैं और अपना दूर संवेदी उपग्रह खुद छोड़ते हैं। जब भारत एक परमाणु और प्रक्षेपास्त्र सम्पन्न देश बन गया तब विकसित देशों ने हमारे ऊपर आर्थिक और प्रौद्योगिकीय प्रतिबंध लगा दिया। हमने अपनी कृषि, प्रौद्योगिकीय और औद्योगिक ताकत के साथ–साथ जनता के उत्साह की बदौलत इस प्रतिबंध को झेल लिया इस उत्साह को बनाऐं रखे और इसे गतिशील बनाकर निखारतें रहें।

जब आप दुनिया की ओर नजर डालते होंगे तो कई बार अपने देश को सौ विकासशील देशों के साथ देखकर निराश हो जाते होंगे और सोचतें होंगे कि हमारे देश तथाकथित 'जी–8' की सूची में नहीं है। उस समय आप देश के सौ करोड़ तेजस्वी मनों को याद करें। तेजस्वी मन इस जहान में, जमीन पर और आसमान में सबसे सशक्त संसाधन हैं। हम अपनी मेहनत से विकासशील भारत को विकसित राष्ट्र बना देंगे। यही है सहस्त्राब्दी मिशन 2020 एक विकसित भारत।"[11]

जीवन मूल्य और प्रवृति

सभी नागरिकों से अनुशासित आचरण की अपेक्षा करना आज समय की माँग है। इससे तेजस्वी नागरिकों का निर्माण होगा। किसी देश के लोग जितने अच्छे होते हैं वह देश उतना ही अच्छा होता है। किसी देश की संरचना में वहाँ की जनता के जीवन मूल्य, नैतिकता और आचरण प्रकट होते हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण कारक होते हैं। ये निर्धारित करते हैं कि देश प्रगति के पथ पर चलेगा या फिर ठहराव के दौर से गुजरेगा। अतएव प्रत्येक नागरिक में शाश्वत जीवन–मूल्यों का

भाव भरने की आवश्यकता है। उनमें अनुशासन के भाव भरने की आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा प्रणाली में इस पहलू पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। नागरिकों में अनुशासन का भाव जगाने के लिए सरकारी और निजी, सभी शिक्षण संस्थानों में उच्चतर माध्यमिक या स्नातक स्तर पर सभी युवकों के लिए कम से कम अठारह माह का एन0सी0सी0 प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया जाये।

हम सभी को यह सोचने और समझने की जरूरत है कि राष्ट्र किसी भी व्यक्ति या संस्था से बड़ा होता है। हमें अपने दैनिक जीवन में ईमानदारी, निष्ठा और सहनशीलता जैसे मूल्यों का अभ्यास करना है। इससे हमारी राजनीति बदल जाएगी। हमें सामाजिक स्तर पर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा कि हम अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं। देष के विषय में सोचने से हम सबका भला होगा। यह हमारा अधिकार और दायित्व है कि हम अपनी भावी पीढ़ी के लिए एक सकारात्मक परम्परा स्थापित करें जिसके कारण वह हमें याद रखेगी।

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति जितनी बहुपक्षीय है, उतनी सम्भवतः संसार की कोई भी दूसरी महान संस्कृति नहीं। भारतीय संस्कृति का कोई भी सामान्यीकरण इसके विविध समुदायों पर लागू नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति के सामाजिक ढाँचे की जटिलताओं को समझना विद्वानों व पर्यवेक्षकों के लिए सदा से चुनौतीपूर्ण रहा है। भारतीय संस्कृति को उसके दीर्घकालीन इतिहास, विलक्षण भूगोल, उसके अपने पड़ोसियों की परम्पराओं, रीति–रिवाजों व विचारों को आत्मसात् करने के साथ–साथ, सिंधु घाटी की सभ्यता के काल से अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के उसके गुणों ने स्वरूप दिया है। भारत को निरन्तर यूरोप, पश्चिम एशिया व मध्य एशिया के आक्रमणों का सामना करना पड़ा तथा 1325 सालों तक तीन लहरों में भारत और उसका आधिपत्य बना रहा, फिर चौथी लहर समुद्रीमार्ग से यूरोपियन शक्तियों व अंग्रेजों की आई, जो 227 सालों तक बनी रही। विभिन्न संस्कृतियों का यह मेल भारतीय सभ्यता की विलक्षणता है। राष्ट्र के परिवेश में बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रीय, सामाजिक एवं आर्थिक समुदाय रहते हैं। इनमें से प्रत्येक के अपने–अपने सांस्कृतिक रीतिरिवाज हैं। भारतीय संस्कृति का विकास कैसे हुआ, उसे ज्ञात करना महत्वपूर्ण है।

जीवन के प्रति प्रत्येक दृष्टिकोण युक्तियुक्त एवं मान्य है। प्रत्येक धर्म सही है। इसका वस्तुओं के प्रति दृष्टिकोण सही है। प्रत्येक आस्था अपने तरीके से युक्तियुक्त है। प्रत्येक अंतदृष्टि

अपने आपमें पूर्ण है। प्रत्येक दृष्टिकोण अपने आप में वैध है। आप जो कुछ सोचते हैं, वह चिंतन भी वैद्य है।

आत्म नियन्त्रण का दर्शन

प्राचीनकाल में भारत को जंबूद्वीप कहा जाता था। बुद्ध और महावीर दोंनो का जन्म यहीं हुआ। जीवनपर्यन्त वे 'उत्तर–मध्य' भारत में रहे। इसे मध्य प्रदेश कहते थे, क्योंकि यहाँ के निवासी इसे पृथ्वी का केन्द्र समझते थे। यह सारा प्रदेश बहुत उपजाऊ है। इसमें दो बड़ी नदियाँ गंगा और यमुना बहती हैं। इनके अतिरिक्त अनेक छोटी नदियाँ भी बहती है। यहाँ तीन प्रकार के मौसम होते हैं। ग्रीष्म, जब तापमान मानव शरीर के तापमान से अधिक हो जाता है, वर्षा, जब नदियों में बाढ़ आती है और यात्रा करना कठिन हो जाता है तथा शीत, जब दिन तो सुखद होते हैं, पर राते बहुत ठंडी। उस समय जोतने के लिए पर्याप्त कृषि–भूमि थी तथा अधिकांश लोगो के पास खाने के लिए पर्याप्त से अधिक होता था। बहुत गरीब किसान भी अपने अतिरिक्त भोजन या आमदनी के लिए जंगली जानवरों का शिकार कर सकते थे। या फिर जंगलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध फलों को एकत्र करके यह आवश्यकता पूरी कर सकते थे।

शाश्वत सत्य

चिरंतन सत्य, ज्ञान या सिद्धान्त सृष्टि की रचना से पहले विद्यमान थे और ये रचना प्रक्रिया को निर्देशित करने के लिए सक्रिय रहे। 'उसने सत्य से आकाश ओर पृथ्वी की रचना की।' सत्य से क्या अभिप्राय है? यह एक चिरंतन, शाश्वत वास्तविकता है। वास्तविकता का पुरातन मार्ग यहाँ सदा था। उसी तरह जैसे खनिज, चट्टानें हीरे खदानों में सुरक्षित रहते हैं। चिरंतन सत्य चिरस्थायी होती है। वास्तविकता चिरस्थायी होती है और अपना व्यवस्थित क्रम बनाए रखती हैं, जैसे किसी प्राचीन नगर का मार्ग। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि कोई व्यक्ति किसी जंगल में घूम रहा है। वहाँ वह एक प्राचीन नगरी खोज निकालता है, जिसकी व्यवस्थित सड़कें हैं। वह उसमें प्रवेश करता है। इसके बाद वहाँ विश्राम करता है। वहाँ उपलब्ध प्रत्येक वस्तु का आनन्द लेता है। इस व्यक्ति ने न तो वह सड़क बनाई थी, जिससे होकर नगर में आया, न ही उसने उस नगर की अन्य वस्तुओं का निर्माण किया था, पर वह उसकी विशेषताओं का आनन्द लेता है।

डॉ कलाम के अनुसार, विकास ऐसी प्रक्रिया नहीं जिसका उददेश्य हमें उत्पीड़न करना, कष्ट पहुॅचाना या और अधिक पीड़ा देना हैं। हमारे अंदर पनपने वाला आध्यात्मिक विकास प्रतिक्रिया की एक श्रृंखला आरम्भ करेगा। हम एक–दूसरे से एकत्व स्थापित करना आरम्भ करेंगे, फिर धरती माँ से और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसके बाद ईश्वर से। सत्य सभी वस्तुओं का जीवन, द्रव्य और निरन्तरता है। हम शक्तियों को क्षति पहुॅचाते हैं, उन्हें पीछे खींचते हैं। इससे सृजन विफल हो जाएगा। मानवीय ज्ञान उन्हें पदार्थ की शक्तियाँ कहता है, लेकिन दैवी विज्ञान के अनुसार यह दिव्य मन की सम्पदा है। ये दिव्य शक्ति के मन में अंतनिर्हित हैं और वह इन्हें इनके उपयुक्त स्थान और वर्ग में स्थापित करता है अब दूसरे प्रश्न पर आते हैं। वृहत् परिवर्तन लघु परिवर्तनों के कारण होतें हैं? क्या धरती माँ अपनी पुरानी ऊर्जा का निष्कासन कर रही है, जिसने उसके महत्वपूर्ण भागों में रोग और व्याधियाँ उत्पन्न की हैं? क्या वह पहले वाले संतुलन की पुनः स्थापना का प्रयास कर रही हैं? यह हो सकता है, पर यह प्रक्रिया पीड़ादायक होगी। जब वह अपने जल का पुनरूद्धार करेगी और अपनी धरती को पुनर्जीवित करेगी, तो हमें मृत्यु और विनाश भुगतना पड़ेगा। क्या धरती को इन ऊर्जाओं का उत्सर्जन करके अपना संतुलन फिर से नहीं बनाना चाहिए? वह हमें दण्ड देने के लिए ऐसा नहीं करेगी, बल्कि इसलिए करेगी कि हमारे लिए एक ऐसा संसार बनाए जिसमें हम नए आनन्द का अनुभव कर पाएँ, ताकि धरती माता उस आनन्द के अनुभव की अभिव्यक्ति करें, जो हम अपने अंतर्मन में अनुभव करते हैं।

नैतिक नियम

नियम और उपदेश बहुधा अस्पष्ट धारणाएँ हैं, क्योंकि ऐसे नियम भी हैं, जो बंधन में जकड़ लेते हैं। ऐसी शिक्षा या उपदेश भी हैं, जो बंधन–मुक्त करते हैं। ईश्वर की उक्तियाँ सुंदरतम हैं। ऐसा शास्त्र, जिसमें उसकी कृपा का वायदा हैं, साथ ही दण्ड का भय भी है जो ईश–भीरू हैं, उनका शरीर उससे काँपता हैं, ताकि उनका शरीर और हृदय उसके स्मरण के प्रति कोमल बना रहे, ईश्वर का दिशा–निर्देश ऐसा ही है। वह जिन्हें चाहता है, उनको निर्देशित करता है जिन्हें वह भटकाना चाहता है, उन्हें निर्देशित नहीं करता।

भारत के मुख्य पूजास्थलों पर लगभग पाँच लाख लोग प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं। अक्सर किसी तीर्थ पर हम लोग अपनी सुख–समृद्धि के लिए प्रार्थना करने जाते हैं क्या हम ऐसे स्थानों पर कोई शपथ नहीं लिख सकते, जैसे–

- मैं तीन साल तक कम से कम पाँच बच्चों को पढ़ाँऊगा।
- मैं अपने पास–पड़ोस में या निकटवर्ती ग्राम में एक जलाश्य बनाँऊगा।
- मैं अपने परिवार में शत्रुता समाप्त कर दूँगा और कोई मुकदमा हो, तो वापस ले लूँगा।
- मैं पाँच फलदार पेड़ लगाँऊगा।
- मैं जुआ नहीं खेलूँगा, न कोई लत लगने दूँगा।
- मैं अपने परिवार में लड़के–लड़कियों को शिक्षा के एक समान अवसर दूँगा।
- मैं अब से एक भ्रष्टाचार रहित, सदाचारपूर्ण जीवन व्यतीत करूँगा।

डॉ कलाम कहते थे कि "अगर दस प्रतिशत भक्त भी इनमें से एक शपथ लेकर उस पर अमल करें, तो समाज में बहुत शांति और व्यवस्था हो जायेगी। "उस व्यक्ति को आशीर्वाद प्राप्त है, जो बुरी संगत में नहीं रहता, पापियों के मार्ग में नहीं ठहरता, उपहास करने वालों के आसन पर आसीन नहीं होता, वह ईश्वरीय नियमों का ध्यान करता है। वह झरनों के पानी से सीचें वृक्ष की तरह है, जो मौसम आने पर फल देता है, जिसकी पत्तियाँ मुरझाती नहीं। वह जो कुछ करता है, उससे फलता–फूलता है।"[12]

आचरण के सिद्धान्त

अपने विकास क्रम में हमारा समाज कृषि से औद्योगिक बना, फिर हाल ही में वह सूचना प्रधान व ज्ञानवान् समाज बना। कृषि–प्रधान और औद्योगिक समाज में मानव और यंत्र की प्रधानता थी। सूचना–प्रधान व ज्ञानवान् समाज में बौद्धिकता की प्रधानता रहेगी। बौद्धिक प्रधानता का प्रतिनिधित्व आदर्श, सिद्धान्तों और आस्थाओं से होता है। इतिहास हमें बार–बार बताता है कि जब कभी व्यक्तियों, समाजों और राष्ट्रो के मार्ग एक दूसरे को काटते हैं, तब–तब मानव अधिकारों का हनन होता है। क्या मनुष्य ने अपने सामाजिक जीवन में, इतिहास में कभी विकास व उन्नयन पाया है? क्या मानव समाज सचमुच विकास के पथ पर अग्रसर है? क्या यह भविष्य में एक पूर्ण विकसित

स्थिति को प्राप्त कर लेगा? अगर वह विकास के रास्ते पर है, तो फिर आदर्श समाज क्या है या फिर प्लेटो के शब्दो में, मानव का कल्पनालोक क्या है। और उसकी विशिष्टताएँ क्या हैं?

यह हमारे युग का एक विचित्र गुण मनुष्यों में एकरूपता और समाजातीयता को हटाता है। वह उसके स्थान पर विभिन्नता व विशेषज्ञता प्रतिस्थापित करता है। मनुष्य हैं और एक ही समाज में रहे रहें हैं, फिर भी लगता है कि हमारे स्वभाव भिन्न–भिन्न हैं। इसका कारण यह है कि हममें से हरेक ऐसा काम करता है, जो दूसरे के लिए अनजाना है, जो किसी दूसरे काम में लगा है। लगता है कि हममें से हरेक अपनी ही बनाई एक दुनिया में जी रहा है।

निष्कर्ष

डॉ ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम एक महान दार्शनिक गम्भीर विचारक, सच्चे शिक्षक एवं उच्चकोटि के शिक्षा शास्त्री थे। वे कहते थे कि धर्म–निरपेक्षता के सिद्धान्त के प्रति अटूट निष्ठा होनी चाहिए। धर्म–निरपेक्षता हमारी राष्ट्रीयता का आधार है और हमारी सभ्यता का एक सबल पक्ष है। सभी नागरिकों से अनुशासित आचरण की अपेक्षा करना आज समय की माँग है। इससे तेजस्वी नागरिकों का निर्माण होगा। किसी देश के लोग जितने अच्छे होते हैं वह देश उतना ही अच्छा होता है। किसी देश की संरचना में वहाँ की जनता के जीवन–मूल्य, नैतिकता और आचरण प्रकट होते हैं। ये महत्वपूर्ण कारक होते हैं। हमें अपने दैनिक जीवन में, ईमानदारी, निष्ठा और सहनशीलता जैसे मूल्यों का अभ्यास करना है। भारतीय संस्कृति जितनी बहुपक्षीय है, उतनी सम्भवतः संसार की कोई भी दूसरी महान संस्कृति नहीं।

सन्दर्भ सूची

1– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–99

2– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–99

3– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–99

4– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–99

5– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–112–113

6– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–113–114

7– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–114

8– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 : 'अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ–194

9– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 एवं महाप्रज्ञ आचार्य : 'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' प्रभात पैपरबैक्स प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ–18–19

10– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 एवं महाप्रज्ञ आचार्य : 'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' प्रभात पैपरबैक्स प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ–46

11– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 एवं महाप्रज्ञ आचार्य : 'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' प्रभात पैपरबैक्स प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ–47

12– अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 एवं महाप्रज्ञ आचार्य : 'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' प्रभात पैपरबैक्स प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ–47